राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य का सामाजिक संदर्भ

डॉ. गजेन्द्र मोहन,

सह आचार्य, राजकीय महाविद्यालय,नसीराबाद (अजमेर)

किसी नई या अस्पष्ट स्थिति अथवा स्थान का सामना करते समय, सामाजिक संदर्भ अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह मनुष्य को खतरे के स्तर को मापने और इसे प्रतिबिंबित करने के लिए अपने व्यवहार को संशोधित करने का एक तरीका देता है। इसका सकारात्मक प्रभाव भी हो सकता है, अगर उन्हें पहली बार किसी नए व्यक्ति को देखने पर अनिश्चितता या चिंता महसूस होती है, तो उसकी शांत मुस्कान और उत्साहजनक आवाजें उनके पास जाने अथवा मिलने जुलने की अधिक संभावना बना सकती हैं। सामाजिक संदर्भ के माध्यम से आश्वस्त होने से मनुष्य को सामाजिक स्थितियों या नए वातावरण में अधिक सहज महसूस होने की स्थिति पैदा होती है। कई बार यह भी संभव होता है कि सामाजिक संदर्भ मनुष्य को उनके विशिष्ट वातावरण के प्रति सजग होने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुर्भाग्य से, सामाजिक संदर्भ के संबंध में सांस्कृतिक भिन्नता के विषय पर बहुत कम शोध हुआ है, लेकिन शोधकर्ताओं का मानना है कि क्योंकि सामाजिक संदर्भ के लिए उपयोग किए जाने वाले मुख्य कौशल काफी हद तक सार्वभौमिक हैं, इसलिए ऐसा लगता है कि सामाजिक संदर्भ भी अनेक रूपों से मौजूद होंगे और वास्तव में संस्कृतियों के बीच अंतर इस बात से संबंधित होने की संभावना है कि मनुष्य सामाजिक संदर्भ से क्या सीखते हैं। अतः सामाजिक संदर्भ वह परिवेश, मनुष्य, अवसर आदि है जो इस बात को प्रभावित करता है कि हम चीजों की व्याख्या कैसे करते हैं, कैसे बोलते हैं, किस बारे में बोलते हैं, या कैसे कार्य करते हैं। सामाजिक संदर्भ में कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसका पहले के अनुभवों से कुछ न कुछ संबंध होता है।

जहां तक राहुल संकृत्यायन के यात्रा साहित्य के सामाजिक संदर्भ की बात है तो उन पर केंद्रित एक कविता '' एक घुमंतू आदमी का हलफनामा '' का एक अंश आपके समक्ष रखना आवश्यक होगा :

'' कठिनाई भरे दुर्गम रास्तों पर चलने का अनुभव,

यही है वह संपदा जो सृजित करता है ।

वह तिल तिल तिरोहित होकर

अर्थहीन नहीं होती है

उसकी कोई भी यात्रा ।''1

वस्तुतः राहुल सांकृत्यायन ने अपने यात्रा साहित्य में गंगा से लेकर वोल्गा तक का सनातन पुनः परिभाषित किया है। यात्रा करते हुए उन्होंने अपनी विशिष्टता को तटस्थ रखते हुए विभिन्न स्थलों के सामाजिक उपकरणों, संदर्भों, विचारों ,नैसर्गिक दृश्यों ,भवन एवं उपासना स्थलों, कला कौशल, सांस्कृतिक सूत्रों आदि को व्याख्यायित किया है। राहुल सांकृत्यायन सच्चे अर्थों में रचनात्मक यायावर थे।उनमें प्रखर सामाजिक बोध और संपन्न यात्री के उत्तम से उत्तम गुण दिखाई पड़ते हैं। यात्री अपने साहित्य में संवेदनशील होकर भी निरपेक्ष रहता है ।ऐसा न होने पर यात्रा के स्थान पर यात्री के अधिक प्रधान हो उठने की संभावना होती है । यात्रा में स्वतः स्थान, दृश्य, प्रदेश, नगर, गाँव आदि मुखरित होते हैं। उनका अपना व्यक्तित्व उभरता है – अपने को केंद्र में रखकर भी प्रमुख न होने देना साहित्यिक

यायावर का कर्तव्य है, क्योंकि यदि लेखक का व्यक्तित्व उभरेगा तो अन्य सब गौण हो जाएगा और यात्रा साहित्य न होकर आत्मचरित ही रह जाएगा।'' 2 राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में यह निरपेक्षता तो है ही साथ ही साथ अतिरंजना और अतिशयोक्ति का भी निषेध है, जिसको बताते हुए वे लिखते हैं – ''रोचक बनाने के लिए ही कितनी ही बार यात्रा लेखक अतिरंजन और अतिशयोक्ति से ही काम नहीं लेते बल्कि कितनी भी बार असंभव असंगत रहस्यवाद के नाम से लिख डालते हैं।''3

राहुल सांकृत्यायन ने जापान, ईरान, रूस में पच्चीस मास, मेरी यूरोप यात्रा आदि यात्रा संस्मरणों में भारतेतर समाज की व्यवस्था का प्रासंगिक वर्णन किया है। किन्नर देश, मेरी लद्दाख यात्रा, राजस्थान, बिहार आदि कृतियों में भारतीय समाज के उन अंशों का चित्रण है जो प्रायः अनछुए रह जाते हैं। उन्होंने यात्रा करते हुए स्थान विशेष के निवासियों का जीवन, उनकी वेशभूषा उनके विचार, उनका आचरण, उनकी भाषा, रूढ़ि परंपरा और उनकी सभ्यता आदि तक का रोचक वर्णन किया है – '' मुल्तान सिंधु और पंजाब प्रांत की संधि पर है । इसलिए यहां की पोशाक में सिंधियों की घागरी जहां एक तरफ शामिल है, वहीं सलवार का बिल्कुल भी अत्यन्ताभाव नहीं है । देहाती लोग अधिकांश मुसलमान हैं । कहीं कहीं कुछ खेती करने वाले भी मिलते हैं। हिंदू ज्यादातर शहरों में रहते हैं और व्यापार तथा नौकरी करते हैं। भाषा ना तो पंजाबी है, और ना ही सिंधी।'' 4 इससे मुल्तान प्रदेश के निवासियों के जीवन पर संपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार पठान और पुंछवासियों के जीवन आदर्श और जीवन– आचारों पर राहुल संकृत्यायन ने ज्ञानवर्धक सूचनाएं प्रदान की।

किसी भी देश– जाति के अनेक लक्षण वहाँ के खाद्य पदार्थों तथा भोजन पद्धतियों से प्रकट होते हैं । राहुल सांकृत्यायन ध्यान में पंजाब के निवासियों के अनुकरणीय गुणों के प्रशंसक हैं ।5 इनके पाक नियमों की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं – '' मुर्गे का मांस और अंडा आमतौर पर खाते हैं..... शादी विवाहों में रसोई बनाने का भार नाई राजा और उसकी रानी पर रहता है।''6

इसी प्रकार तिब्बत के व्यक्तियों का विचित्र खानपान उनको बहुत आकर्षित करता है । '' गेंहू काफी होने पर भी भोटिया लोग रोटी नहीं खाते । गेहूं जौ आदि भूनकर पीस लेते हैं , उसे चंबा कहते हैं । राजा से लेकर भिखारी तक का यही प्रधान खाद्य पदार्थ है।नमक, मक्खन, मिश्री, गर्म चाय के प्याले में डालकर उसमें चंबा रस हाथ से मिलाकर ये लोग खाते हैं। इनका प्रधान खाद्य मांस है। अधिकतर सूखा और कच्चा ही खाते हैं । शराब पीते हैं। अन्य आहारों में भाप में पकाया मांस का समोसा ' मोमो ' ,खिचड़ी, थुक पा, यहां तक कि जूं तक का भी उल्लेख है ।7

संस्कृतियों के अवरोध के कारण अनेक प्रतिगामी परंपरायें इन क्षेत्रों में सक्रिय हैं । राहुल सांकृत्यायन ने इन पर आलोचनात्मक दृष्टिपात किया है। लद्दाख में बहुपति विवाह प्रथा, तथा स्थानीय मुसलमानों में प्रचलित मियादी शादी पर भी उन्होंने विस्तार से दृष्टिपात किया है। उनके अनुसार '' लद्दाख सभ्यता का रथ दुराचार सुरासेवन अज्ञान और अंधविश्वास में फंसा हुआ है।'' 8

मूलतः बौद्ध धर्म से प्रभावित होने के बाद भी राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत में प्रचलित धार्मिक विकृतियों को अनदेखा नहीं किया है। जनजीवन में पूरी आत्मीयता के साथ प्रवेश करते हुए उन्होंने तिब्बती समाज की कुछ विशेष पारिवारिक प्रवृतियों की ओर भी संकेत किया है– '' भोट में स्त्री पुरुष सभी लोग नंग सोते हैं । इसमें वहाँ कोई संकोच नहीं माना जाता है। इस प्रकार सोते माता पिता को लड़के चाय भी दे आते हैं ।9

'किन्नर देश में ' यात्रा साहित्य में भी जगह जगह ऐसे विवरण प्राप्त होते हैं। पुरुषों तथा स्त्रियों के जीवन में शताब्दियों के संस्कारों का धुंधलका देख लेखक अथवा यायावर आकर्षित होता है। स्वदेश के साथ राहुल सांकृत्यायन ने फ्रांस, लंदन, जर्मनी ईरान आदि स्थानों के विवरण प्रदान किए हैं । अंग्रेजों की उदात्त वृत्ति उनमें विद्यमान प्रगति विरोधी वृत्तियों का राहुल सांकृ त्यायन ने जीवंत चित्रण किया है। ' चीन में क्या देखा' तथा ' रूस में पच्चीस मास ' यात्रा संस्मरणों में इन साम्यवादी आस्थाओं के विस्तारक राष्ट्रों की ढेर सारी गतिविधियां अंकित हैं। संस्कृ ति – समाज तथा अर्थव्यवस्था के समीकरणों के राहुल सांकृत्यायन विश्व समुदाय की भावी दशा – दिशा की ओर संकेत किया है। रूस के चित्रण में उनका पूर्ण विश्वास मुखर है। 1935 के ईरानी समाज, शाह पहलवी के शासन तथा संपूर्ण ईरान पर यूरोपीय संस्कृति का प्रभाव उन्होंने ने ' ईरान ' पुस्तक में रेखांकित किया है।10

तिब्बत यात्राओं का राहुल सांकृत्यायन के जीवन में अत्यधिक महत्व है। भोट समुदाय के विषय में संपूर्ण समाजशास्त्र संभवत राहुल संकृ त्यायन ने ही पहली बार प्रस्तुत किया है। अपनी रूढ़िग्रस्तता के बावजूद भी उनके मध्य कला, संगीत, संस्कृति के उज्जवल विस्तार को उन्होंने चिन्हित किया है। तिब्बत की राजनीतिक व्यवस्था, स्थानीय प्रबंध क्षमता , ल्हासा में शासकीय दमन तथा नेपाल की सामाजिक व्यवस्था पर उन्होंने पूरे उत्साह के साथ वर्णन किया है । उत्सव, सामूहिक नृत्य, रामलीला सदृश नाटक तथा दीपमाला सम्मान का भी उन्होंने उल्लेख किया है।11 कला कुशलता का परिचय संस्कया के फोटाड महल प्रसंग में वे देते हैं और यात्रा के बीच आने वाले स्थानों की सामाजिकता को पूरा सम्मान देते हुए प्रस्तुत करते हैं। जीवन को उसकी समग्रता में वे ग्रहण भी करते हैं। समाज में साहित्य और संगीत की शक्ति का विश्लेषण करते हुए राहुल सांकृत्यायन की सामाजिक दृष्टि जीवंत हो उठती है। '' किन्नर देश में '' संस्मरण में वे इसका मार्मिक वर्णन करते हैं। इसमें ही वे विभिन्न स्थानों पर प्रचलित स्थानीय गीतों का संकलन भी करते हैं।

इस प्रकार समग्रतः यह कहना चाहिए कि राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य पूरी तरह सामाजिकता से ओत प्रोत है। वे जहाँ जहाँ भी गए वहाँ के समाज और निवासियों से घुलते मिलते चले गए जिसकी स्पष्ट छाप उनके यात्रा साहित्य में दिखाई पड़ती है।

संदर्भ

1. उत्तरप्रदेश, अप्रैल 1993, आवरण 3
2. हिन्दी साहित्य कोश, पृष्ठ 609
3. घुमक्कड़ शास्त्र, राहुल सांकृत्यायन,पृष्ठ 142
4. मेरी लद्दाख यात्रा, राहुल सांकृत्यायन,पृष्ठ 11
5. वही – पृष्ठ 5 – 9
6. वही – पृष्ठ 16
7. यात्रा के पन्ने, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 68 – 85
8. राहुल यात्रावली, पृष्ठ 202
9. किन्नर देश , राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 57
10. ईरान, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ 74
11. राहुल यात्रावली, पृष्ठ 368

Copyright © 2017, Dr. Gajendra Mohan. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.